https://universitynews.in/

M.A. (Previous) EXAMINATION, 2018

HINDI

Fourth Paper

(मध्यकालीन काव्य)

Time allowed: Three hours **Maximum marks: 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द है।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये–

(क) ऊधो ! यह मन अधिक कठोर।
निकसि न गयो कुंभ कांचे ज्यों बिधुरत नंदकिशोर।।
हम कुछ प्रीति-रीति नहिं जानी तब ब्रजनाथ तजी।
हमरे प्रेम न उनको ऊधो ! सब रस रीति लजी।।
हमतें भली जलचरी बपुरी अपनो नेह निबाहैं।

जल तें बिछुरत ही तन त्यागें जल ही जल को चाहैं।।
अचरज एक भयो, सुनो ऊधो ! जल बिनु मीन जियो।
सूरदास प्रभु आवनि कहि गए मन विश्वास कियो।। 2+7

अथवा

कोउ माई ! बरजै या चंदहि ।
करत है कोप बहुत हम्ह ऊपर, कुमुदिनि करत अनंदहि ।।
कहाँ कहू, कहँ रबि अरु तमचुर, कहाँ बलाहक कारे।
चलत न चपल, रहत रथ थकिकर, बिरहिनि के तन जारे।।
निंदित सैल, उदधि, पन्नग को, सापति कमठ कठोरहिं।
देति असीस जरा देवी को, राहु केतु किन जोरहिं ?
ज्यों जलहीन मीन-मन तलफत, त्योंहि तपत ब्रजबालहि।
सूरदास प्रभु बेगि मिलावहु मोहन मदन गोपालहि ।। 2+7

(ख) जो पै रहनि राम सो नाहीं।
तौ नर खर कूकर सूकर सम बृथा जियत जग माहीं।।
काम, क्रोध, मद, लोभ, नींद, भय, भूख, प्यास सबही के।
मनुज-देह सुर साधु सराहत, सो सनेह सिय-पी के ।।
सूर, सुजान, सुपूत, सुलच्छन, गनियत गुन गरुआई।
बिनु हरिभजन इँदारुन के फल तजत नहीं करुआई ।।
कीरति, कुल, करतूति, भूति, भलि, सील, सरूप, सलोने।
तुलसी प्रभु-अनुराग-रहित जस सालन साग अलोने।। 2+7

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

अथवा

जो मन भज्यौ चहै हरि-सुरतरु।
तौ तजि बिषय-बिकार, सार भजु, अजहूँ जो मैं कहौं सोइ करु।।
सम, संतोष, बिचार विमल अति, सतसंगति, ये चारि दृढ़ करि धरु।
काम-क्रोध अरु लोभ-मोह-मद, राग-द्वेष निसेष करि परिहरु ।।
श्रवन कथा, मुख नाम, हृदय हरि, सिर प्रनाम, सेवा कर अनुसरु।
नयननि निरखि कृपा-समुद्र हरि अग-जग-रूप भूप सीताबरु।।
इहै भगति, बैराग्य-ग्यान यह, हरि-तोषन यह सुभ ब्रत आचरु।
तुलसिदास सिव-मत मारग यहि चलत सदा सपनेहुँ नाहिंन डरु।। 2+7

(ग) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ,
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित-दुति होइ ।
या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ,
ज्यौं-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।
मोहन मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोइ,
बसतु सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिंबित जग होइ।। 2+7

अथवा

तंत्री नाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग,
अनबूड़े, बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग।
बेसरि-मोती-दुति-झलक, परी ओठ पर आइ,
चूनौ होइ न चतुर तिय, क्यों पट पोंछ्यो जाइ।
मंगल बिन्दु सुरंग मुख, ससि केसर आड गुरु,
इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन-जगत। 2+7

(घ) नैनन मैं लागे जाय, जागै सु करेजे बींच,
या बस है जीव धीर होत लोटपोट है।
रोम रोम पूरि पीर, व्याकुल सरीर महा,
धूमै मति गति आसैं, प्यास की न टोट है।
चलत सजीवन-सुजान दृग हाथन तें,
प्यारी अनियारी रुचि रखबारी ओट है।
जब-जब आवै तब-तब अति मन भावै,
अहा कहा विषम कटाछ-सर चोट है।। 2+7

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

अथवा

को बिरहणि को दुख जाणै हो।
जो घट बिरहा सोई लखिहै, कै कोई हरिजन मानै हो।
रोगी अंतर बैद बसत है, बैद ही ओखद जाणै हो।
बिरह-करद उरि अंतरि माँही, हरि विणि सब सुख कानै हो।
दुगधा आरण फिरै दुखारी, सुरत बसी सुत माँ नै हो।
चातक स्वाँति बूंद मन माँही, पीव पीव उकलाणै हो।
सब जग कूड़ो, कंटक दुनिया, दरद न कोई पिछाणै हो।
मीरां के पति आप रमैया, दूजो नहिं कोइ छानै हो।। 2+7

2. ''सूर की भक्ति किसी साम्प्रदायिक घेरे में घिरी हुई न होकर उन्मुक्त भक्त हृदय का सहज उद्‌गार है।'' इस कथन के आलोक में सूरदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिये। 16

अथवा

सूर का 'भ्रमरगीत' शृंगार रस का सुन्दर उपालंभ काव्य है। इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिये। 16

3. ''तुलसी कृत विनयपत्रिका में भावपक्ष एवं कलापक्ष का मणिकांचन संयोग है।'' इस कथन की तर्कसहित मीमांसा कीजिये। 16

अथवा

गीति काव्य-परम्परा का उल्लेख करते हुए तुलसी की विनय-पत्रिका का मूल्यांकन कीजिये। 16

4. ''बिहारी सतसई रीतिकाल की ही नहीं, बल्कि हिन्दी साहित्य की एक सर्वश्रेष्ठ मुक्तक रचना है।'' स्पष्ट कीजिये। 16

अथवा

''बिहारी के काव्य में कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समास शक्ति का अद्‌भुत समन्वय है।'' स्पष्ट कीजिये। 16

5. ''सौन्दर्य निरूपण, आत्म-समर्पण, आत्म-निवेदन और वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से मीरां के पद पाठक के हृदय को छू लेते हैं। इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। 16

अथवा

''प्रेम की पीर के गायक कवि घनानन्द का विरह सरस, सहज, अकृत्रिम और अद्वितीय है।'' इस कथन की विवेचना कीजिये। 16

❑❑❑

https://universitynews.in/